प्रातः क्लास 31-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठरूहानी बच्चों को समझाते हैं। अभी तो यह बच्चे जानते हैं कि दैवी स्वराज्य का उद्घाटन हो चुका है। अभी तैयारी हो रही है वहां जाने के लिए। जहां कोई शाखा खोली जाती है तो कोशिश की जाती है बड़े आदमी विद्वान आद से ओपनिंग कराने। बड़े आदमी को देख नीचे वाले आफिसर आद सभी आ जावेंगे। समझो गवर्नर आवेंगा तो बड़े2 मिनिस्टर्स आद आवेंगे। अगर कलेक्टर को तुम भगावेंगे तो बड़े आदमी नहीं आवेंगे। इसलिए कोशिश की जाती है बड़े ते बड़ा आदमी आवे। किस न किस बहाने से अन्दर आवे तो तुम उनको रास्ता बताओ। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा कैसे मिलता है। ऐसा कोई दूसरा मनुष्य नहीं जो जानता हो तुम ब्राहमणों के सिवाय। ऐसे भी सीधा नहीं कहना है भगवान आ गया है। ऐसे भी बहुत कहते हैं भगवान आ गया है। परन्तु नहीं। ऐसे अपन को भगवान कहलाने वाले तो ढेर आये हैं। तो समझाना है बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा दे रहे हैं। कल्प पहले मिशल ड्रामा के पलैन अनुसार सारी सेन्टेन्श लिखना पड़े। लिखत में पड़ने से मनुष्य पढ़ेंगे फिर कोशिश करेंगे। जिनके तकदीर में होगा। तुम बच्चों को तो मालूम है ना हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। यहां तो निश्चय बुधि बच्चे हो आते हैं। निश्चय बुधि भी फिर कोई समय संशय बुधि बन जाते हैं। माया पछाड़ लेती है। चलते 2 माया हरा देती है। ऐसा तो ला भी नहीं है ऐ तरफ जीत हो दूसरी तरफ हार हो ही नहीं। हार और जीत दोनों ही चलती है। अभी तुम जीत पा रहे हो। ऐसे भी नहीं कि सभी जीत पा सकते हैं। नहीं। यह तो युध चलती है। युध में भी तीन प्रकार के होते हैं। फर्स्ट क्लास, सेकण्डक्लास, थर्ड क्लास। कुस्ती अथवा बाकसिंग में भी तीन प्रकार की जोड़ियां आती हैं। सब से पहलवान फर्स्ट क्लास फिर सेकण्ड थर्ड ग्रेड। यह तो तुम्हारी है माया के साथ युध। इसमें भी फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड=थर्ड क्लास हैं। कब2 युध न करने वाले भी देखने आ जाते हैं। वह भी अलो किया जाता है। अगर बहुत अलो करेंगे तो सारा शहर आ जावेगा। कब कब अलो किया जाता है। शायद कुछ रंग लग जाये। और सेना में आ जाये। क्योंकि दुनिया को तो यह पता नहीं है कि तुम महारथी योधे हो। क्योंकि तुम्हारे हाथ में तो कुछ भी हथियार पवार आद नहीं है। तुम्हारे हाथ में हथियार आद शोभेंगे नहीं। परन्तु बाप समझाते हैं ना ज्ञान तलवार, ज्ञान कटारी तो। तो उन्हों ने फिर स्थूल समझ लिया है। तुम बच्चों को बाप ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। उन मनुष्यों को यह अज्ञान तलवार, काम कटारी। तुम बच्चों के हाथ में है ज्ञान की। हिंसा की बात ही नहीं। बेसमझ तो तो हैं ना। देवियों को स्थूल हथियार आद दे दिये हैं उनको भी हिंसक बना दिया है। यह है बिल्कुल बेसमझ। मूर्ख की भी हद न रही है। मूर्ख भी महामूर्ख हैं। तुम अभी फील करते हो कितने मलेच्छ थे। ऐसे नहीं कि तुम सभी वैष्णव थे भक्त थे। सभी में दैवीगुण थे नहीं बाप जानते हैं अच्छी तरह से कि कौन2 फूल बनने वाले हैं। वह तो खुद ही बाप कहते हैं। फूल आगे होनी चाहिए। निश्चय है यह फूल बनने वाले हैं। बाबा नाम नहीं लेते हैं। नहीं तो और कहेंगे हम कांटे बनेंगे क्या। बाबा पूछते हैं नर से नारायण कौन बनेंगे तो सभी हाथ उठाते हैं। यूं तो खुद भी समझ सकते हैं। जो जास्ती सर्विस करते हैं वह बाप को भी याद करते हैं। बाप से प्यार है तो उनकी याद में भी रहेंगे। एकदम तो कोई भी याद कर न सके। याद नहीं कर सकते हैं इसलिए प्यार नहीं। प्यारी चीज को तो बहुत याद किया जाता है। बच्चे प्यारे होते हैं तो माथा कुल्हे पर भी चढ़ा लेते हैं। छोटे बच्चे तो फूल हैं। जैसे तुम बच्चों की दिल होती है तो बाबा की गोद में जावें। वैसे छोटे बच्चे भी खेंचते हैं। झट बच्चे को उठा कर गोद में बिठावेंगे। प्यार करेंगे। यह बेहद का बाप तो बहुत ही प्यारा है। सभी मनोकामनाएं पूरी कर देते हैं। मनुष्य को क्या चाहता है। एक तो चाहते हैं तन्दुरुस्ती अच्छी हो। कब बिमार आद न हों। सब से अच्छी तन्दुरुस्ती। तन्दुरुस्ती अच्छी हो पैसे न हो तो तन्दुरुस्ती क्या काम की। फिर चाहिए धन। जिससे सुख मिले। बाप कहते हैं। तुमको हेल्थ भी मिलनी है जरूर। यह कोई नई बात नहीं। यह तो बहुत ही पुरान

बात है। तुम जब2 मिलेंगे तो ऐसे ही पुरानी कहेंगे। बाकी यह कुछ भी नहीं कह सकेंगे कि लाखों बर्ष हुई वा पदमों बर्ष हुई। नहीं। तुम जानते हो यह नई कब होती है फिर पुरानी कब होती है। हम आत्मायें नई दुनिया में जाती हैं। फिर पुरानी में आते हैं। तुम्हारा नाम ही रखा है आलराउन्डर। बाप ने समझाया है तुम आलराउन्डर हो। पार्ट बजाते2 अभी बहुत जन्मों के अन्त में आकर पहुंचे हो। पहले2 शुरू में तुम पार्ट बजाने आते हो। वह है स्वीट सायलेन्स होम। मनुष्य शान्ति के लिए कितना हैरान होते हैं। यह नहीं समझते हम शान्तिधाम में थे वहां आये हैं पार्ट बजाने। अगर यह याद रहे तो जंगल आद में जाने की दरकार नहीं। शान्तिधाम से तो यहां आये ही हैं पार्ट बजाने। पार्ट पूरा हुआ फिर हम जहां से आये हैं वहां जरूर जावेंगे। सब शान्तिधाम से आते हैं। सब का घर वह ब्रह्मलोक है। ब्रह्माण्ड जहां सभीआत्मायें रहती हैं। रूद्र को भी इतना बड़ा बनाते हैं अण्डे मिशल। उनको यह पता नहीं है कि आत्मा बिल्कुल छोटी है। कहते हैं स्टार मिशल हैं। फिर भी पूजा बड़ी की ही करते हैं। यह समझने से तुम जानते हो इतनी छोटी पिण्डी की तो पूजा हो नहीं सकती। फिर भी पूजा नहीं तो किसकी करें। तो बड़ा बनाते हैं। पूजा करते हैं दूध चढ़ाते हैं वास्तव में तो वह शिव है। अभोक्ता फिर उनको दूध क्यों चढ़ाते हैं। दूध पीवे तो फिर भोक्ता हो गया। यह भी एक वन्डर है जो शिव बाबा को दूध चढ़ाते हैं। जरूर मात-पिता बनते होंगे परन्तु वे जो सब कुछ करते हैं वह सभी हैं सा0। प्रेक्टीकल में कुछ भी नहीं हैं। सब कहते हैं वह हमारा वार्स है। हम उनके वार्स हैं। क्योंकि हम उन पर फिदा हुये हैं। जैसे बाप बच्चों पर फिदा हो सारी प्रापर्टी उनको दे खुद बानप्रस्त में चले जाते हैं। यहां भी तुम समझते हो बाबा पास जितना हम जमा करेंगे क्योंकि इनको अविनाशी बैंक कहा जाता है। ऐसे अविनाशी बैंक और कोई होती नहीं। जितना जमा करेंगे उतनासेफ हो जावेंगा। गायन भी है किनकी दबी रहे धूल में.... तुम बच्चे तो जानते हो कुछ भी रहने का नहीं हैं। सभी भस्म हो जाना है। ऐसे भी नहीं है, समझो एरोपैलेन गिरते हैं, विनाश होता है तो कोई चोरों को माल मिलता है। नहीं। चोर आद खुद भी भस्म हो जावेंगे। उस समय चोरकारी भी बन्द हो जावेंगी। नहीं तो एरोपलेन गिरते हैं तो पहले2 चोरों को माल प्राप्त आती है। फिर वहां ही जंगलों में जाकर छिपा देते हैं। सेकण्ड में काम कर लेते हैं। खेतों से भी बहुत धन निकालते हैं। जमीन्दार आद बहुत धनवान होते हैं ना। डर लगता है तो फिर ले जाते हैं। किसको भी पता न पड़े। दिवालों आद में छिपाते हैं। मिस्त्रियों को तो पता पड़ता है। फिर वह लोग उनको कमीशन देते हैं। बड़े2 आफिसर आद मिलकर खाते हैं। अनेक प्रकार के काम करते हैं। कोई रायलिटी से कोई अनरायलिटी से। तुम जानते हो यह सभी विनाश हो जावेंगे। और तुम सारे विश्व के मालिक बन जावेंगे। तुमको कहीं भी कुछ ढूंढ़ना नहीं पड़ेगा। तुम तो बहुत ही ऊंच घर में जन्म लेते हो। पैसे की दरकार ही नहीं। राजाओं को कब पैसे लेने का ख्याल नहीं होगा। देवताओं को तो बिल्कुल ही नहीं रहता। बापतुमको इतना सब कुछ दे देते हैं जब कब चोरकारी ईर्ष्या आद की बात ही नहीं। तुम बिल्कुल फूल बन जाते हो। कांटे और फूल हैं ना। यहां सभी कांटे हैं। भल बड़ाआदमी होगा विकार बिगरथोड़े ही रह सकेंगे। तो उनको जरूर कांटा ही कहना पड़े ना। बाप समझाते हैं यह सभी कांटे हैं। राजा से लेकर सभी कांटे हैं। तब बाबा कहते हैं मैं तुमको इन राजाओं का भी राजा बनाता हूं। यह कांटे फूलों के आगे जाकर माथा झुकाते हैं। यह तो समझ है ना यह भी बाप ने समझाया है सतयुग वालों को महाराजा त्रेता वालों को राजा कहा जाता है। बड़े आमदनी तो कहेंगे महाराजा। छोटी आमदनी वालों को राजा कहेंगे। यहां कोई पैसे इकट्ठा हैं तो फिर अपलाय कर सकते हैं महाराजा का टाईटल लेने लिए। खर्चा लगता है। लाख दो लाख देने से महाराजा बन जाते हैं। महाराजा के दरबार पहले होंगे मर्तबे तो होते हैं। ना कुर्सियां भी मिलेंगी बार। समझो न आने वाला कोई आ जाता है तो पहले कुर्सी उनको देंगे इज्जत रखनी होती

तुम भी जानते हो हमारी माला बनती है यह भी सिर्फ तुम बच्चों की ही बुधि में है । और किसकी बुधि में नहीं है। रुद्र माला उठा कर फरते रहते है। तुम भी फरते थे ना। अनेक मंत्र जपते हैं। जो जिसका होगा मंत्र जपेंगा। कोई तो सन्यासी कहते हैं हमको याद करते रहो तो बहुत गुरु की भी माला फरते हैं। व्यभिचारी हो गये हैं ना। बाप कहते है यह सभी हैं भक्ति मार्ग। यहां तो एक को ही याद करना है। और बप साफ कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों। भक्ति मार्ग देहअभिमान कारण तुम सभी को याद करते थे। अभी मामेकं याद करो। एक बाप मिला है तो उठते बैठते बाप को याद करो तो बहुत ही खुशी होगी। बाप को याद करने से सारे विश्व की बादशाही मिलती है। जितना टाईम कम होता जावेंगा उतना जल्दी2 करते रहेंगे। दिन प्रति दिन दुःख बढ़ते रहेंगे। आत्मा कब थकती नहीं है। तुम शरीर से कोई पहाड़ से= आद पर चढ़ेंगे तो थक जावेंगे। बाप को याद करने में तुमको कोई थकवावट नहीं होंगी। खुशी में रहेंगे। बाबा को याद कर आगे बलते जावेंगे। आधा कल्प बच्चों ने मेहनत की है शान्तिधाम में जाने लिए पर रूमआबजेक्ट का कुछ भी पता नहीं हैं। तुम बच्चों को तो परिचय है भक्ति मार्ग में जिसके लिए इतनासभी कुछ किया । वे कहते हैं अभी मुझे याद करो। तुम ख्याल करो बाबा ठीक कहते हैं या नहीं। वे तो समझते हैं पानी से ही पावन हो जावेंगे। यह है सभी झूठा पानी तो यहां भी है। तो क्या यह गंगा का पानी है।नहीं। यह तो बरसात का उकट्ठा हुआ पानी है। फिर झरणों से आता ही रहता है।कभी बन्द नहीं होता। यह भी कुदरत है। बरसात बन्द हो जाती है परन्तु पानी आता ही रहता है। इनको गंगा का पानी नहीं कहेंगे। वैष्णव लोग हमेशा कुंआ का ही पानी पीते हैं एक तरफ समझते हैं पवित्र है।और दूसरे तरफ फिर समझते हैं पतित से पावन बनने स्नान करने जाते हैं। अ इनको तो अज्ञान की कहेंगे ना। बरसात का पानी तो अच्छा ही होता है। यह भी ड्रामा का कुदरत कहा जाता है।खुदाई नेचरल कुदरत । बीज कितना छोटा होता है। उन से झाड़ कितना बड़ा निकलता है। यह भी जानते हो धरती कलराटी हो जाती है तो उन में ताकत नहीं रहती हैं। स्वाद नहीं रहता है। तुम बच्चों को यहां ही बाप सभी अनुभव कराते हैं। कैसे स्वर्ग होगा अभी तो नहीं हैं। ड्रामा में यह भी नूंधा है। बच्चों को सा0 होता है वहां के फल आद कितने मीठे होते हैं। तुम ध्यान में देखकर आते हो और सुनाते हो। फिर अभी जो सा0 करते हो वह वहां जब जावेंगे तो इन आंखों से देखेंगे, मुख से खावेंगे। सा0 करते हो वह फिर तुम इन आंखों से देखेंगे। फिर है पुरुषार्थ पर। अगर पुरुषार्थ ही न करेंगे तो पावेंगे। तुम्हारा पुरुषार्थ चल रहा है हम ऐसे बनेंगे। इस विनाश के बाद इन ल0ना0का राज्य होगा अभी मालूम पड़ा है। पावन बनने में ही टाईम लगता है।याद की यात्रा बहुत ही मुख्य है। देखाभन= बहन भाई समझने से भी बाज नहीं आते हैं तो फिर अभी कहते हैं भाई2 समझो। बहन भाई से भी दृष्टि नहीं फिरती। भाई2 देखने से फिर शरीर ही नहीं रहता। हम सभी आत्माएं हैं शरीर नहीं हैं। यह बाप की युक्ति है। यहां जो कुछदेखने में आता है वह सभी विनाश हो जावेंगा। यह शरीर छोड़ कर तुमको नंगे जाना है। तुम यहां आते ही हो सीखने के लिए। हम यहशरीर छोड़ कर आत्मा कैसे जावें। मंजिल है ना। शरीर तो आत्मा को बहुत ही प्यारा है। शरीर न छूटे इसके लिए आत्मा कितना प्रबन्ध आद करती है। हमारा यह शरीर न छूट जाये। आत्मा प्रेम को इस शरीर से बहुत ही प्यारहै। बाप कहते हैं यह तो पुराना शरीर है तुम तमोप्रधान हो। तुम्हारी आत्मा छी2 हैं इसलिए दुःखी बिमार हो पड़ते हो। बाप कहते हैं अभी शरीर से प्यार न नहीं रखना है।यह तो पुराना शरीर है। अभी तुम का नया खरीद करना है। कोई दुकान नही रखा है जहां से खरीद करना है बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बाजवेंगे।फिर शरीर भी पावन मिल जावेंगा। 5तत्व भी पावन बन जावेंगे। तत्वों आद को भी याद नकरना है। बाप सभी बातें समझा कर कहते हैं। कहते हैं मन्मना मुझे याद करो। अपने को आत्मा समझो तुम समझते हो हम आत्मा हैं हम शरीर नहीं हैं। हम मालिक हैं एक

शरीर छोड़दूसरा लेना है। हमको पार्ट मिला हुआ है जो बजाना है। नाटक में कबरोते हैं क्या। बाकी शास्त्रों में जो बातें बैठ लिखी हैं वह सभी दन्तकथाएं। अभी यह भक्ति मार्ग खलास जरूर होना है। भक्ति करते माला फेरते ऐसे ही खत्म हो जावेंगे। बैठे2 मरते रहेंगे। कब न कब ऐसे मरते रहेंगे। तब बाप समझाते हैं अभी जरूर बच्चे पैदा न करो। कोई भी काम के नहीं रहेंगे। कोई के भी बच्चे वारिस नहीं बनेंगे। अभी समय ही नहीं है। जो बच्चे बड़े हो और वारिस बन सकें। वह समझते हैं बच्चे बड़े होंगे वारिस बनेंगे। क्यों कि वह समझते हैं कलियुग की आयु बहुत बड़ी है। बाप कहते हैं यह है 5000वर्ष का ड्रामा। तुम हिसाब करते रहो। अभी बच्चे क्या वारिस बन सकेंगे। तो क्यों फिर भी खाते हैं। क्योंकि मोह बहुत है। पिछाड़ी में कहेंगे बाबा यह लो। बाबा कहेंगे टुलेट। अभी हम क्या करेंगे यह तो सभी खत्म हो जाना है। हम लेवें क्यों जो फिर भर कर देना पड़े। हम पक्का शराफ हैं। कोई से लेवे और खत्म हो जावे फिर हमको भर कर देना पड़े। ऐसा हम लेवें ही क्यों। इसलिए गरीब बहुत आते हैं। जो दो कणा भी देते हैं तो भी मिलता बहुत है यमा का मिशाल है। जल्दी ही चले जाते हैं। क्यों कि योग नहीं है। कर्मातीत अवस्था न बनी बाकी जो कमाई की है चली नहीं जाती। जन्म हुआ है तो भी बहुत ऊंच घर में। जहां सर्विस कर रही है। इनके चरित्र ही ऐसे हैं। फिर भी बहुत ताकत ले गई है ना। बेहद की बाप की ताकत ली। आत्मा में ताकत होगी तो चरित्र भी ऐसे हो चलेंगे। कृष्ण में ताकत थी। तब तो चरित्र दिखाते थे। कैसे फर्स्ट क्लास बच्चे होंगे। कब रोयेंगे नहीं। तो मां-बाप क्या समझेंगे। कहेंगे यह तो देवता है। देवतायें कब रोते नहीं हैं। जरूर कोई देवी गुणों वाला बिछुड़ कर आया है। गुण साथ में ले आये हैं। तो जाकर सर्विस करते हैं ना। तुम शरीर छोड़ते हो तो भी सर्विस एबुल हो। जितना पहले गये हैं बड़े होकर फिर आवेंगे। आधा में छोड़ा हुआ फिर लेने आवेंगे। आगे चल कर यह भी बाबा बता देंगे कि तुम्हारा आगे वाला फलाना नाम वाला है। यह भी बतावेंगे। फिर तुमको खुशी होगी। जब कि बाप इतना सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं तो यह क्यों नहीं बतावेंगे। ड्रामा में पार्ट है। अभी तक बहुत रहा हुआ है। बाप गुह्य2 बातें सुनाते हैं। जो पहले सुनाई थी। कोई कहते हैं पहले क्यों नहीं बताया। अरे यह तो ड्रामा है ना। सुनाते जावेंगे तुम करो। बाबा जब तक है गुह्य2 बातें सुनाते रहेंगे। कोई पूछे फिर क्या होगा। बोलो बाबा ने यह थोड़े ही है। आगे चल बतावेंगे। अगर तुम यहां जीते रहेंगे तो सुनावेंगे। मर जावेंगे तो सुनेंगे नहीं। अच्छा

माला का अर्थ भी तुम समझ गये हो। तुम माला क्या फेरेंगे। शिव बाबा तो बैठे हैं। तुम नमस्ते किसको करेंगे। देवताओं से भी ऊंच हैं ब्राह्मण। शिव बाबा तुम ब्राह्मणों को पढ़ा रहे हैं। तुम सारे विश्व को पवित्र बनाते हो। अभी तो है नर्क। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। घोर-अंधियारा है ना। ज्ञान से सदगति होती है। भक्ति से दुर्गति। सन्यासी खुद यह नहीं समझते। तुम समझाओ तो झट समझेंगे। आधा कल्प ज्ञान आधा कल्प भक्ति। फिर हो पुरानी दुनिया से वैराग्य। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध देखते हो सभी को भूलते जाओ। तुम बच्चों को इनको न पांवपड़ना है न हाथ ही जोड़ना है। यह तो बाबा है ना। घर में बच्चे पड़ी2 हाथ जोड़ते हैं क्या। फिर तो सारा समय हाथ जोड़ खड़े हो जाये। यह सभी है भक्ति। शिव बाबा कहते हैं मैं तो तुम्हारा गुलाम हूं। तुमको राजाई दे मैं बानप्रस्थ में बैठ जाता हूं। यहां तुमको बेसमझ से समझदार बनना है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया है इसमें सभी बेसमझ हैं। नई दुनिया में समझदार थे। अभी फिर बनाते हैं। बाप कहते हैं हमांगो कुछ भी नहीं। पुरुषार्थ करो। यह तो समझते हो पवित्रयोगी थे। अभी अपवित्रभोगी बने हैं। इसलिए आयु भी छोटी हो गई है। फिर आधा कल्प लिए तुम्हारी आयु बड़ी हो जावेगी। वहां है 2। जन्म फिर अपवित्र बनने से 63 जन्म लेते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

*::****::*